5

संज्ञानात्मक प्रक्रिया एवं शिक्षण पूर्व-प्राथमिक स्तरीय विद्यार्थियों के संदर्भ में

मणि माला कुमारी*

बच्चा वातावरण में उपस्थित विभिन्न प्रकार के उद्दीपकों के प्रति तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ करके धीरे-धीरे अपने वातावरण का ज्ञान प्राप्त करता है। बाह्य जगत का ज्ञान बच्चे को ज्ञानेंद्रियों के द्वारा प्राप्त होता है। ज्ञानेंद्रियों के प्रभाव को मस्तिष्क तक पहुँचने की प्रक्रिया को संवेदना कहते हैं। संवेदना की तार्किक व्याख्या को प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। पूर्व अनुभवों के आधार पर बनी मानसिक प्रतिमाएँ संप्रत्यय कही जाती हैं। बच्चे के व्यवहार को समझने के लिए इन सभी संप्रत्यय को समझना अत्यंत आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। वस्तुतः बच्चा क्या व्यवहार करता है, क्यों करता है तथा कैसे करता है, यह तीनों प्रश्न मनोवैज्ञानिकों के लिए सदैव ही अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। नि:संदेह बच्चे तथा वातावरण के बीच होने वाली सतत अंतर्क्रिया ही बच्चों के व्यवहार को निर्धारित करती है। अतः तार्किक ढंग से व्यवहार करने से पूर्व बच्चों के लिए अपने पर्यावरण को जानना अत्यंत आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। बच्चा अपने पर्यावरण को कैसे जानता है, उस पर कैसे नियंत्रण करता है, उससे किस प्रकार से अंतर्क्रिया करता है, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका उत्तर संवेदना, प्रत्यक्षीकरण तथा संप्रत्यय के अध्ययन से मिल सकता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में संवेदना, प्रत्यक्षण तथा संप्रत्यय निर्माण के विषय में चर्चा की गई है। साथ ही शिक्षक किस प्रकार से बच्चों के संवेदना, प्रत्यक्षण तथा संप्रत्यय निर्माण की शिक्षा के लिए उचित वातावरण प्रदान करके उनकी ज्ञानेंद्रियों का विकास करेंगे, इस विषय पर भी चर्चा करते हुए संवेदना, प्रत्यक्षण तथा संप्रत्यय निर्माण के शैक्षिक महत्व को बताया गया है।

संज्ञान का अर्थ

संज्ञान का अर्थ अपने आस-पास के पर्यावरण को जानने व समझने की प्रक्रिया से है। अत: संज्ञानात्मक विकास से अभिप्राय उन मूलभूत कौशलों के विकास से है जो हमें अपने पर्यावरण को जानने में सहायता करते हैं। शिशु में कुछ मूलभूत दक्षताएँ होती हैं। वे आस-पास की वस्तुओं को देख सकते हैं, गतिशील वस्तुओं का दृष्टि से पीछा कर सकते हैं और स्पर्श और स्वाद के प्रति प्रतिक्रिया कर सकते हैं।

संवेदन का अर्थ एवं स्वरूप

संवेदन एक ऐसी सरल मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में एक आभास

*शोधार्थी, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली 110016

not to be republished © NCERT

मात्र होता है क्योंकि इसमें अर्थहीनता एवं अस्पष्टता होती है। संवेदन से तात्पर्य दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद संतुलन, स्पर्श तथा दर्द की ज्ञानेंद्रियों से प्राप्त मौलिक संवेदी आँकड़ों से होता है। जे.पी. दास (1998) ने उद्दीपकों को प्राप्त करने की पहली अवस्था को ही संवेदन कहा है। संवेदन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ज्ञानेंद्रियाँ दृष्टि, श्रवण एवं अन्य संवेदी उद्दीपकों की पहचान करके उसकी सूचना मस्तिष्क को देती हैं। अर्थात संवेदन में निम्नलिखित बातें पायी जाती हैं—

- **संवेदन एक मानसिक प्रक्रिया है**— मानसिक प्रक्रिया से तात्पर्य वैसी क्रियाओं से होता है जो मन या मस्तिष्क के सहारे होती हैं। मानसिक प्रक्रियाएँ तीन तरह की होती हैं— संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक। संवेदन एक संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है।
- **संवेदन एक आरंभिक मानसिक प्रक्रिया है**— उद्दीपक के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए चिंतन, कल्पना, तर्क जैसी कई तरह की मानसिक क्रियाएँ होती हैं। परंतु पहले जो मानसिक प्रक्रिया होती है, वह है संवेदन की। किसी वस्तु पर चिंतन करने के लिए यह आवश्यक है कि पहले उसका संवेदन हो, इसीलिए संवेदन को एक आरंभिक मानसिक प्रक्रिया कहा जाता है।
- **संवेदन में उद्दीपक का आभास मात्र है**— संवेदन इतनी सरल प्रक्रिया है कि इसमें उद्दीपक का कोई स्पष्ट अर्थ नहीं पता चलता है, मात्र उसका एक सामान्य आभास होता है। जैसे कोई वस्तु हमारी आँखों के सामने झट से आकर हट जाती है।
- **संवेदन के लिए उद्दीपक की उपस्थिति अनिवार्य होती है**— उद्दीपक को व्यक्ति ज्ञानेंद्रिय से ग्रहण करता है जिसके परिणामस्वरूप उसमें तंत्रिका आवेग पैदा होता है। यह तंत्रिका आवेग जब मस्तिष्क में पहुँचता है तो हमें उस वस्तु का संवेदन होता है। अर्थात संवेदन एक ऐसी आरंभिक संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमें उद्दीपक का आभास मात्र या अर्थ रहित ज्ञान होता है।

पाँचों इंद्रियों का प्रयोग

- जानने और समझने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे इन्हीं के माध्यम से सीखते हैं।
- बच्चों के इंद्रियजन्य अनुभवों में जितनी विविधता होगी और उनका जितना विस्तार होगा, संसार को देखने और समझने का उन्हें उतना ही व्यापक आधार मिल सकेगा।
- यदि इंद्रियों के विकास के अनुरूप परिस्थिति नहीं होगी या बहुत कम होगी तो बच्चों में गलत अथवा अपूर्ण संबंध विकसित हो सकते हैं।
- संज्ञानात्मक कौशलों के विकास के लिए पाँचों इंद्रियों (देखने की इंद्रिय, सुनने की इंद्रिय, स्पर्श अनुभव करने की इंद्रिय, सूँघने की इंद्रिय, स्वाद लेने की इंद्रिय) को सुदृढ़ करने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

प्रत्यक्षण का अर्थ एवं स्वरूप

प्रत्यक्षण एक महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रिया है। प्रत्यक्षण की क्रिया संवेदन की प्रक्रिया से प्रारंभ होती है और किसी व्यवहार करने की क्रिया के पहले तक होती रहती है। अतः प्रत्यक्षण की प्रक्रिया संवेदन तथा व्यवहार करने की क्रिया के बीच की प्रक्रिया होती है।

© NCERT not to be republished

आर. एल. एटकिंसन, आर. सी. एटकिंसन तथा ई.आर. हिलगार्ड (1983) के अनुसार प्रत्यक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम लोग वातावरण में उपस्थित उद्दीपकों की व्याख्या करते हैं तथा उसे संगठित करते हैं।

प्रत्यक्षण ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव को अपने आंतरिक अंगों तथा अपने वातावरण के बारे में सूचना मिलती है।

अर्थात प्रत्यक्षण सक्रिय, चयनात्मक एवं संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति को अपने आंतरिक अंगों तथा बाह्य वातावरण में उपस्थित वस्तुओं का तात्कालिक अनुभव होता है।

प्रत्यक्षण विशेषताएँ

- **प्रत्यक्षण के लिए उद्दीपक का होना अनिवार्य है**— प्रत्यक्षण हमेशा किसी वस्तु, घटना या व्यक्ति का होता है। जिन व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं का प्रत्यक्षण होता है, उसे उद्दीपक की संज्ञा दी जाती है।
- **प्रत्यक्षण में उद्दीपक का तात्कालिक अनुभव होता है**— जब व्यक्ति के सामने कोई उद्दीपक उपस्थित होता है तो उसका ज्ञान तुरंत होता है, न कि उस उद्दीपक के बारे में कुछ देर तक सोचने के बाद। मॉर्गन, किंग तथा रॉबिंसन ने प्रत्यक्षण को परिभाषित करते हुए कहा है, "व्यक्तियों द्वारा किया गया तात्कालिक अनुभव ही प्रत्यक्षण है।"
- **प्रत्यक्षण एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है**— तात्पर्य यह है कि किसी उद्दीपक का प्रदर्शन करते समय व्यक्ति का मस्तिष्क काफ़ी सक्रिय होकर वस्तु या घटना की व्याख्या पूर्व-अनुभूतियों के संदर्भ में करता है। जैसे कि आम को देखकर मात्र आम का ही प्रत्यक्षण नहीं होता है बल्कि इसके विशेष गुण खट्टा या मीठा होने का भी प्रत्यक्षण करते हैं। रुच (1967) ने स्पष्टत: कहा है, "प्रत्यक्षण एक सक्रिय प्रक्रिया है।"
- **प्रत्यक्षण संज्ञानात्मक प्रक्रिया है**—संज्ञानात्मक प्रक्रिया से तात्पर्य ऐसी प्रक्रिया से होता है जिसके द्वारा हमें उद्दीपकों के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है।
- **प्रत्यक्षण में उद्दीपकों को संगठित किया जाता है**— प्रत्यक्षण में सिर्फ़ उद्दीपकों की व्याख्या ही नहीं की जाती, बल्कि उन उद्दीपकों का विशेष नियमों के आधार पर एक खास ढंग से संगठन भी होता है। जैसे यदि हम किसी व्यक्ति के चेहरे पर देखते हैं तो ऐसा नहीं होता है कि उसका होंठ, आँख, ललाट, गाल सभी का हम अलग-अलग प्रत्यक्षण करते हैं। वास्तव में इन सब का प्रत्यक्षण एक संगठित इकाई के रूप में हम करते हैं।
- **प्रत्यक्षण चयनात्मक प्रक्रिया है**— किसी भी समय अनेक उद्दीपक हमारी ज्ञानेंद्रियों को उत्तेजित करते हैं, परंतु उनमें से सभी का हम प्रत्यक्षण नहीं कर पाते हैं। वास्तव में हम उन्हीं उद्दीपकों का प्रत्यक्षण करते हैं जिनपर हम ध्यान देते हैं। अर्थात प्रत्यक्षण एक ऐसी सक्रिय चयनात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें उद्दीपकों द्वारा उत्पन्न संवेदन का हम अर्थ ही नहीं जोड़ते हैं बल्कि अपनी पूर्व-अनुभूति के संदर्भ में उसकी व्याख्या भी करते हैं एवं उसे कुछ खास-खास नियमों के आधार पर एक संगठित रूप भी देते हैं।

संप्रत्यय निर्माण का अर्थ एवं स्वरूप

चिंतन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है तथा इसका एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय संकल्पना का विकास है। संप्रत्यय एक ऐसे प्रतीक को कहा जाता है जिससे

© NCERT not to be republished

वस्तुओं की सामान्य विशेषताओं का पता चलता है। अतः इसका महत्व सिर्फ़ चिंतन में ही नहीं, बल्कि व्यक्ति की भाषा के विकास में भी काफ़ी अधिक है। पूर्व-अनुभवों के घनीभूत रूप को संप्रत्यय कहते हैं। संप्रत्ययों को ज्ञान प्राप्ति का तृतीय सोपान माना जाता है। किन्हीं परिस्थितियों, वस्तुओं अथवा कार्यों में एक समान सादृश्यता वाले उद्दीपक की मानसिक प्रतिमा को संप्रत्यय कहा जाता है। सामान्यतया विभिन्न परिस्थितियों अथवा वस्तुओं में उपस्थित सामान्य गुण अथवा सामान्य संबंधों से संप्रत्ययों का निर्माण किया जाता है। संप्रत्यय निर्माण सामान्यीकरण की एक ऐसी प्रक्रिया है जो विभिन्न सादृश्य वस्तु या परिस्थितियों में तो परिलक्षित होती है, परंतु किसी एक वस्तु या परिस्थिति को अभिव्यक्त करने में सटीक ढंग से परिलक्षित नहीं होती है। मूर्त से अमूर्त की ओर तथा विशिष्ट से सामान्य की ओर बढ़ने पर संप्रत्ययों का विकास होता है। जैसे-जैसे बच्चों का बौद्धिक विकास होता जाता है, उनके प्रत्यय अधिकाधिक अमूर्त होते जाते हैं। जैसे, बच्चा जब किसी पालतू जानवर को देख कर सीखता है कि वह कुत्ता है तो वह जान जाता है कि कुत्ते की चार टाँग, दो आँख, एक पूँछ, दो कान तथा सफ़ेद रंग होता है किंतु उसका यह ज्ञान प्रारंभ में एक विशेष ज्ञान तक ही सीमित रहता है। इसके उपरांत बच्चा जब अन्य विभिन्न कुत्तों को देखता है, तब धीरे-धीरे उसके मन में कुत्तों से संबंधित एक सामान्य विचार बन जाता है तथा वह कुत्तों का अन्य जानवरों से स्पष्ट भेद करके पहचानना सीख लेता है। बच्चे के मन में बनने वाले इस सामान्यीकृत विचार को ही प्रत्यय कहते हैं। धीरे-धीरे बच्चा अपने आस-पास उपस्थित वस्तुओं, व्यक्तियों, घटनाओं से संबंधित अनेक प्रत्ययों का निर्माण करने लगता है। सामान्यीकरण की प्रक्रिया में मस्तिष्क व्यक्तिगत प्रतिमाओं में निहित विशिष्ट गुणों को अलग कर देता है तथा उनके सामान्य गुणों को एकीकृत करके उनसे संबंधित सामान्य प्रत्यय का निर्माण करता है। वुडवर्थ के अनुसार प्रत्यय वे विचार हैं, जो वस्तुओं, घटनाओं, गुणों आदि का उल्लेख करते हैं।

प्रत्यय निर्माण

मस्तिष्क संवेदनाओं के द्वारा विभिन्न वस्तुओं अथवा परिस्थितियों के संबंध में प्राप्त सूचनाओं का संश्लेषण तथा विश्लेषण करके संप्रत्ययों का निर्माण करता है। संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया में व्यक्तियों को निम्नांकित पाँच मानसिक क्रियाओं अथवा सोपानों से गुजरना पड़ता है—

> संप्रत्यय से तात्पर्य एक वर्ग की वस्तुओं, लोगों, स्थानों तथा तत्वों के मानसिक चित्र या संकल्पना बनने से है। यदि किसी बच्चे में रंगों का सम्बोध विकसित हो गया है तो वह पर्यावरण में उपलब्ध वस्तुओं के रंगों के आधार पर श्रेणीबद्ध कर सकेगा। अपने पर्यावरण को समझने के लिए बच्चों में प्रमुख प्रत्यय का निर्माण होना आवश्यक है। स्पष्ट प्रत्यय का विकास होने पर ही वे अपने पर्यावरण में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं का निरीक्षण और विभेदीकरण कर सकेंगे और उन्हें श्रेणीबद्ध कर सकेंगे। ऐसा होने पर वे "निरीक्षण आधारित निष्कर्षों" से तर्क पर आधारित सही निष्कर्षों तक पहुँच सकेंगे।

- **अवलोकन**— संप्रत्यय निर्माण प्रक्रिया का प्रथम सोपान अवलोकन है। संप्रत्यय निर्माण के इस सोपान में सर्वप्रथम बच्चे अनेक वस्तुओं

© NCERT not to be republished

को देखते हैं तथा उनकी विभिन्न विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

- **विश्लेषण**— संप्रत्यय निर्माण का दूसरा सोपान अवलोकित वस्तु अथवा परिस्थिति के विभिन्न गुणों अथवा विशेषताओं को विश्लेषित करना है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि बच्चा विभिन्न वस्तुओं को देखने से प्राप्त ज्ञान का विश्लेषण करता है।
- **तुलना**— विभिन्न वस्तुओं की विशेषताओं के अवलोकन तथा विश्लेषण के उपरांत परस्पर तुलना की जाती है। बच्चा एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा परिस्थितियों की विशेषताओं की तुलना करता है। इस तुलना के द्वारा वह विभिन्न वस्तुओं अथवा परिस्थितियों में समानता तथा असमानताओं को अच्छी तरह से जान जाता है।
- **पृथक्करण**— अवलोकन, विश्लेषण तथा तुलना के उपरांत समान प्रकार की वस्तुओं अथवा परिस्थितियों में पायी जाने वाली समानताओं तथा विभिन्नताओं को पृथक-पृथक किया जाता है। पृथक्करण के द्वारा बच्चे को वस्तुओं में समानता तथा अंतर का स्पष्ट ज्ञान हो जाता है। एक समान वस्तुओं में पाए जाने वाले सामान्य गुण का अन्य वस्तुओं के गुणों से विभेदन करना अमूर्तकरण कहलाता है।
- **सामान्यीकरण**— संप्रत्यय निर्माण प्रक्रिया का अंतिम सोपान सामान्यीकृत करना है। अवलोकन, विश्लेषण, तुलना तथा पृथक्करण से विभिन्न वस्तुओं के सामान्य गुणों का परिचय मिल जाता है तथा उनमें व्याप्त समानता और असमानता स्पष्ट हो जाती है। विभिन्न असमानताओं के बावजूद कुछ वस्तुओं अथवा परिस्थितियों में एकरूपता परिलक्षित होती है। बच्चे उनके सामान्य गुण पहचानने लगते हैं। सामान्य गुणों के आधार पर साम्य वस्तुओं की एक मानसिक प्रतिमा स्पष्ट हो जाती है जिसे प्रत्यय कहा जाता है। इस प्रत्यय को एक संज्ञा देकर उसका नामकरण कर दिया जाता है। संप्रत्यय को दी गई संज्ञा ही संबंधित प्रत्यय के सामान्य गुणों को इंगित करती है।

संवेदना के लिए ज्ञानेंद्रियों की शिक्षा

संवेदन के द्वारा प्राणी को विभिन्न वस्तुओं अथवा परिस्थितियों का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञानेंद्रियाँ ज्ञान प्राप्त करने का प्रमुख साधन है। ज्ञान प्राप्ति में ज्ञानेंद्रियों तथा संवेदनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। संवेदना ज्ञान प्राप्ति का प्रथम सोपान है। ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से व्यक्ति को संवेदना महसूस होती है। आधुनिक काल में पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा को ज्ञानेंद्रिय शिक्षा के रूप में स्वीकार किया जाता है। शैक्षिक दृष्टि से ज्ञानेंद्रियों की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। ज्ञानेंद्रिय शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य नि:संदेह ज्ञानेंद्रियों को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना है कि बच्चों को सही ढंग से अनुभव तथा निरीक्षण करना आ जाए जिससे बच्चा अपनी ज्ञानेंद्रियों का सही उपयोग करना सीख जाए। ज्ञानेंद्रियों के समुचित विकास से बौद्धिक विकास में सहायता मिलती है। मैडम मारिया मांटेसरी ने अपनी मांटेसरी शिक्षण विधि में छोटे बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में ज्ञानेंद्रिय शिक्षा पर ज़ोर दिया है। उन्होंने ज्ञानेंद्रियों की शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षोपकरणों का निर्माण किया जिनके माध्यम से बच्चा प्रसन्नतापूर्वक अपनी ज्ञानेंद्रियों का समुचित उपयोग करना सीख लेता है। नि:संदेह संवेदना का मानव जीवन में अत्यंत महत्व

not to be republished © NCERT

है। व्यक्ति संवेदनाओं के द्वारा ही अपने बाह्य जगत का ज्ञान प्राप्त करता है।

बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से ज्ञानेंद्रियों को प्रशिक्षित करके उनका विकास करना अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। बच्चों की ज्ञानेंद्रियों के विकास के साथ उनकी संवेदनाएँ स्पष्ट तथा प्रबल होती जाती हैं। अतः प्रारंभ से ही बच्चों के लिए ज्ञानेंद्रिय शिक्षा की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। ज्ञानेंद्रिय शिक्षा की उचित व्यवस्था करके बच्चों की संवेदनाओं को स्पष्ट स्वरूप दिया जा सकता है जो कालांतर में बच्चों के भावी विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अत: आवश्यक है कि परिवार तथा पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों को छोटे बच्चों की सर्वोत्तम ज्ञानेंद्रिय शिक्षा हेतु आवश्यक वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।

नि:संदेह ज्ञानेंद्रिय शिक्षा की उचित व्यवस्था करने के लिए यह आवश्यक होगा कि सर्वप्रथम बच्चों की ज्ञानेंद्रियों की ओर उचित ध्यान दिया जाए। यदि किसी बच्चे की ज्ञानेंद्रियों में कोई दोष या रोग है तो उस दोष या रोग का उपचार करने के लिए चिकित्सीय परामर्श लेना चाहिए।

बच्चों की ज्ञानेंद्रियों के विकास के लिए यह भी अत्यंत आवश्यक है कि उन्हें उचित क्रियाशील वातावरण उपलब्ध हो सके। वास्तव में बच्चों के स्वभाविक विकास में उनकी क्रियाशीलता तथा चंचलता एक महत्वपूर्ण तथा उपयोगी भूमिका अदा करती है। बच्चे अपनी क्रियाशीलता या चंचलता के कारण स्वभाविक ढंग से भिन्न-भिन्न वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं। माता-पिता तथा अध्यापकों को इसमें किसी प्रकार का कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहिए। संकुचित तथा निष्क्रिय वातावरण में बच्चों की ज्ञानेंद्रियों का विकास ठीक ढंग से नहीं हो पाता है, जबकि खुला तथा क्रियाशील पारिवारिक व विद्यालय वातावरण ज्ञानेंद्रियों के विकास में सहायता करता है। उपयुक्त खेल-खिलौने की व्यवस्था करके छोटे बच्चों को क्रियाशील बनाया जा सकता है।

प्रत्यक्षण के लिए शिक्षा

प्रत्यक्षण ज्ञान प्राप्ति का दूसरा सोपान है। प्रत्यक्षण के द्वारा किसी वस्तु अथवा परिस्थिति को अर्थ दिया जाता है। प्रत्यक्षण का आधार प्राणी का पूर्व-ज्ञान होता है, इसलिए शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य बच्चों के पूर्व-ज्ञान तथा अनुभवों में यथासंभव वृद्धि करना है जिससे उनमें प्रत्यक्षण शक्ति का विकास हो सके तथा उनके प्रत्यक्षण में स्पष्टता भी आ सके। प्रत्यक्षण का अवलोकन करने की शक्ति से घनिष्ठ संबंध होता है। अवलोकन के द्वारा किसी वस्तु या परिस्थिति का प्रत्यक्षण स्पष्ट ढंग से होता है। अतः प्रत्यक्षण के विकास के लिए प्रारंभ से ही बच्चे की अवलोकन शक्ति का अधिकाधिक विकास करना चाहिए। मारिया मांटेसरी तथा किंडरगार्टन जैसी नवीन शिक्षा प्रणालियों में अवलोकन शक्तियों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। क्रियाशीलता के द्वारा बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने के अधिक अवसर मिलते हैं। इसीलिए बच्चों को ऐसा वातावरण तथा अवसर प्रदान किए जाने चाहिए कि वे अधिक क्रियाशील हो सकें। बच्चों के लिए खेलकूद, व्यायाम आदि की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। प्रत्यक्षण के विकास के लिए बच्चों

को शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी स्थानों को देखने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। संग्रहालयों, प्रसिद्ध इमारतों, स्मरणीय स्थानों तथा आस-पास के अन्य वातावरण को देखने के लिए भ्रमण की व्यवस्था की जा सकती है। प्रत्यक्षण को बढ़ाने के लिए अध्यापक विविध प्रकार की शिक्षण सामग्री का प्रयोग कर सकते हैं। अध्यापक को उदाहरण तथा श्रव्य, दृश्य सामग्री की सहायता से कठिन व जटिल प्रकरणों को सरस व रोचक ढंग से बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करके प्रत्यक्षण को प्रोत्साहित करना चाहिए।

बच्चों की निरीक्षण शक्ति का विकास करके उनके प्रत्यक्षण को बढ़ाया जा सकता है। बच्चों की निरीक्षण शक्ति में गहनता के न होने के कारण वे अपने सम्मुख उपस्थित विभिन्न उद्दीपकों को अपने संज्ञान में नहीं ला पाते हैं। बच्चों को ज्ञानेंद्रिय विकास के अधिक अच्छे अवसर प्रदान करके उनके प्रत्यक्षण को बढ़ाया जा सकता है। माता-पिता तथा अध्यापकों को चाहिए कि वे बच्चों को भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुएँ दिखाएँ तथा उनकी विशेषताओं में समानता तथा असमानता को स्पष्ट करें। बच्चों को निरीक्षण करने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाने चाहिए। बच्चों का ध्यान उनके वातावरण में विद्यमान विभिन्न वस्तुओं के प्रति आकर्षित करना अत्यंत आवश्यक है। उन वस्तुओं के संबंध में पूछकर बच्चों को उन वस्तुओं का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। नवीन शिक्षण विधियाँ, जैसे— प्रोजेक्ट विधि, डाल्टन योजना, बेसिक शिक्षा पद्धति आदि बच्चों को निरीक्षण करने के अधिक सार्थक अवसर प्रदान करती हैं। 'कार्य करके सीखने' से बच्चों की निरीक्षण शक्ति तथा प्रत्यक्षण का विकास होता है।

संप्रत्यय निर्माण के लिए शिक्षा

संप्रत्यय निर्माण ज्ञान प्राप्ति का तीसरा सोपान स्वीकार किया जाता है। संप्रत्यय विकास का शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत महत्व है। शैशवावस्था से ही प्रत्ययों का विकास प्रारंभ हो जाता है। शिशु अपने बाह्य वातावरण की विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान ज्ञानेंद्रियों के द्वारा प्राप्त करता है तथा संप्रत्ययों का निर्माण करने लगता है। वह अपने बाह्य वातावरण में उपस्थित प्रत्यक्ष वस्तुओं, जैसे— दूध पीने की बोतल, गिलास, कटोरी, खिलौने, चारपाई, मेज, कुर्सी एवं शरीर के विभिन्न अंग आदि सरल प्रत्ययों का विकास करता है। प्रारंभ में उसके प्रत्यय कुछ अस्पष्ट से होते हैं तथा वह शब्दों के द्वारा उनको ठीक ढंग से व्यक्त नहीं कर पाता, परंतु धीरे-धीरे उसके प्रत्ययों का स्वरूप स्पष्ट होने लगता है। वास्तव में संप्रत्ययों का निर्माण लगातार चलने वाली एक अंतहीन प्रक्रिया है।

निरीक्षण, अनुकरण तथा वार्तालाप संप्रत्ययों के निर्माण में अत्यंत उपयोगी होते हैं। पूर्व-प्राथमिक कक्षा में या प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेने तक शिशु अनेक प्रत्ययों का निर्माण कर चुका होता है। परंतु उसके ये प्रत्यय प्रायः अस्पष्ट तथा धुंधले होते हैं। अतः अध्यापकों को चाहिए कि वे बच्चों के प्रत्ययों को स्पष्ट रूप प्रदान करने का प्रयास करें। मानसिक विकास की दृष्टि से प्रत्ययों का विकास एक महत्वपूर्ण कार्य है। अतः प्रत्यय विकास की दिशा में विद्यार्थियों को अग्रसर करने के लिए अध्यापकों को सतत प्रयास करने की आवश्यकता है। सुस्पष्ट प्रत्यय निर्माण के लिए बच्चों को व्यापक तथा विस्तृत अनुभव प्राप्त करने के अधिकाधिक अवसर प्रदान करने चाहिए। 'सरल से कठिन की ओर' तथा 'मूर्त से अमूर्त की ओर' जैसे शिक्षण सूत्रों के अनुरूप शिक्षण कार्य

© NCERT not to be republished

करके अध्यापकगण विद्यार्थियों के प्रत्यय निर्माण में अधिक सहायक हो सकते हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के व्यावहारिक तथा वास्तविक होने पर विद्यार्थी प्रत्ययों को अधिक सरलता से सीख लेते हैं। अभिव्यक्ति के अधिक अवसर भी प्रत्ययों को स्पष्टता प्रदान करने में सहायक होते हैं। नि:संदेह शिक्षा प्रक्रिया प्रत्ययों के निर्माण तथा अस्पष्ट प्रत्ययों को स्पष्ट रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा का कार्य है कि वह शनैः-शनैः जटिल प्रत्ययों के निर्माण में बच्चों की सहायता करें क्योंकि प्रत्यय निर्माण में सामान्यीकरण तथा पृथक्करण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसीलिए अध्यापक को बच्चों में सामान्यीकृत तथा पृथक्करण करने की योग्यताओं का विकास करना चाहिए। अध्यापक को दोष रहित अवलोकन के द्वारा प्रत्यक्षण तथा प्रत्यय निर्माण करने में बच्चों की सहायता करनी चाहिए। अधिक व्यापक अनुभव देने एवं मूर्त से अमूर्त तथा सरल से जटिल की ओर के शिक्षण का प्रयोग करके अध्यापक बच्चों के प्रत्यय निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

निष्कर्ष

ज्ञानेंद्रियों के द्वारा व्यक्ति पर होने वाले प्रभाव को संवेदना कहा जाता है। पाँच प्रमुख संवेदनाएँ क्रमश: दृष्टि, श्रवण, घ्राण, स्वाद तथा स्पर्श हैं। शैक्षिक दृष्टि से बच्चों में ज्ञानेंद्रियों के समुचित विकास तथा सांवेदिक अनुभवों की प्रचुरता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। संवेदना की मानसिक व्याख्या प्रत्यक्षण कहलाती है। प्रत्यक्षण अनेक कारकों से प्रभावित हो सकता है। दृष्टि भ्रम अथवा अन्य कारणों से प्रत्यक्षण में त्रुटि हो सकती है। सही प्रत्यक्षण का विकास करने के लिए बच्चे की निरीक्षण शक्तियों को प्रोत्साहित करना होगा। पूर्व अनुभव की मानसिक प्रतिमा को संप्रत्यय कहा जाता है। शैक्षिक दृष्टि से संप्रत्यय निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों में प्रत्यय विकास को अधिकाधिक प्रोत्साहित करना चाहिए। संप्रत्यय के विकास से बच्चों को अपने शिक्षकों की बातों को समझने में सुविधा होती है। जिस हद तक उनके संप्रत्यय विकसित होते हैं, उसी हद तक वे शिक्षक द्वारा दिए गये शिक्षण से लाभान्वित हो पाते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि शैक्षिक उपलब्धि एवं संप्रत्यय निर्माण के बीच धनात्मक सह-संबंध होता है। जिन बच्चों में संप्रत्यय निर्माण अधिक होता है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है । शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने में संवेदन, प्रत्यक्षण एवं संप्रत्यय निर्माण की शिक्षा से काफ़ी सहायता मिलती है। अतः शिक्षकगण बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकते हैं।

संदर्भ

एटकिंसन, आर. एल., आर.सी एटकिंसन और ई. आर. हिलगार्ड. 1983. *इंट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी*. हरकोर्ट ब्रेसा जौवेनोविच आठवां संस्करण, न्यूयॉर्क. पृ. 133.

गुप्ता, एस. पी. 2014. *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*. पृ. 392, 394. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

जायसवाल, सीताराम. 2005. *मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

© NCERT not to be republished

मोर्गन. सी. आई. और आर. ए. किंग रोबिनसन, 1984. *इन्ट्रोडक्शन टू साइकॉलजी*. मैक्ग्रॉहिल इंटरनेशनल बुक कंपनी. सिंगापुर.
रुच. 1967. *साइकोलॉजी एंड लाइफ़*. पृ. 300. स्कॉट, फोर्समैन एंड कंपनी, ग्लेन व्यू.
शर्मा, रामनाथ. 2004. *भारतीय मनोविज्ञान*. अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
सिंह, अरुण कुमार. 2012. *शिक्षा मनोविज्ञान*. भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, अंसारी रोड दरियागंज, दिल्ली.
———. 2013. *संज्ञानात्मक मनोविज्ञान*. पृ. 89, 91, 81, 417. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली.
सुलेमान, मुहम्मद. 2010. *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली.
श्रीवास्तव, रामजी. 2005. *संज्ञानात्मक मनोविज्ञान*. मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली.

© NCERT not to be republished